आखिरत पर ईमान लाने का मतलब क्या हैं?

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

📓 राहे अमल हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

आखीरत पर ईमान लाने का मतलब ये है की आदमी इस हकीकत को कुबूल करे कि एक ऐसा दिन आने वाला है जिस मे इन्सानो की जिन्दगी के पूरे रिकार्ड की जांच पडताल होगी, तो जिसके करम ठीक होंगे वह इनाम पायेगा, और जिसके करम ठीक नही होंगे वह सजा पायेगा. सजा कितनी होगी और इनाम कितना मिलेगा इसको बताया नही जा सकता. [मुस्लिम; उमर बिन खत्ताब रदी, रिवायत के एक हिस्से का खुलासा]

◆ आखिरत की खौफनाकी और उसके नजात का जरिया

लोग रसूलुल्लाहﷺ की बेचैनी और फिक्र को देख कर और ज्यादा परेशान हुवे और पूछा कि जब आपका यह हाल है तो

हमारा क्या हाल होगा, बताये हम क्या करे कि उस दिन कामयाब हो, रसूलुल्लाहﷺ ने उनको बताया कि अल्लाह पर भरोसा रखो उसकी निगरानी मे झिन्दगी गुझारो, उसकी बन्दगी मे जीने वाले कामयाब होंगे. [तिर्मिज़ी; अबू सईद खुदरी रदी, रिवायत का खुलासा]

◆ आखिरत का मन्जर

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- अगर कोई शख्स कयामत के दिन को अपनी आंखो देखना चाहता है तो उसे चाहिये कि ये तीन सुरते पढे, इजश शम्सु कुव्विरत, इजस समाउन फतरत, और इजस समाउन शक्कत, इन तीनो सुरतो मे कयामत का नकशा बहुत ही मोअस्सिर अन्दाज खीचा है. [तिर्मिज़ी इबने उमर रदी, रिवायत का खुलासा]

◆ जमीन का खुल्ला खुल्ला एलान

रसूलुल्लाहﷺ ने यह आयत पढी “यौमइजिन तुहद्दीसु अखबारहा" (उस दिन जमीन अपने सारे हालात बयान करेगी) और सहाबा रदी से पूछा जानते हो हालात बयान

करने का मतलब क्या है? लोगों ने कहा अल्लाह और उसके रसूल को ही इल्म है. रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया कि जमीन कयामत के दिन गवाही देगी कि फला मर्द या फला औरत ने मेरी पीठ पर फला दिन और फला वकत मे बुरा या अच्छा काम किया, यही मतलब है इस आयत का, लोगों के इन कामो को आयत मे "अखबारा" कहा गया है.

[तिर्मिजी; अबू हुरेरा रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ अल्लाह के सामने पेश होने की हालत

रसूलुल्लाहﷺ इनफाक यानी अल्लाह के दीन और अल्लाह के बेसहारा बन्दों पर खर्च करना की तालीम दे रहे थे इस लिये सिर्फ इसी का जिकर किया फरमाते है कि अगर किसी के पास सिर्फ एक खजूर है और वह उस का आधा हिस्सा देता है तो यह भी अल्लाह की निगाह मे कीमती है वह माल की कमी ज्यादती नहीं देखता बल्कि खर्च करने वाले के जज्बा को देखता है. [बुखारी, मुस्लीम; अदि बिन हातिम रिवायत का खुलासा]

◈ कयामत की सखती मे मोमिन से नरम सुलूक

अबू सईद खुदरी रदी कहते है कि मे रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत मे हाजिर हुवा और पूछा कि उस दिन जिस के बारे मे अल्लाह ने फरमाया है. "योंमा यकूमुन्नासू लिरबबिल आलमीन" (तू उस दिन को सोच जब लोग हिसाब किताब" के लिये संसार के मालिक के सामने खडे होंगे) उस दिन भला कौन लोग खडे रह सकेंगे (जबकि वह एक दिन हजार बरस के बराबर होगा) रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया (उस दिन की सख्ती मुजरिमों और बागियों के लिये है, उन्हे वह एक हजार बरस का मालूम होगा, मुसीबत मे पडे हुये आदमी का दिन लम्बा होता है, काटे नहीं कटता) वह दिन मोमिनो के लिये हल्का होगा सिर्फ हल्का ही नहीं होगा बल्कि फर्ज नमाज की तरह उसकी आंखो की ठंडक बन जायेगा. [मिश्कात, अबू सईद खुदारी रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ आसान हिसाब और उसके लिये दुवा

जो लोग अल्लाह की राह पर चलते है और बुराई की ताकतो से लडते रेहते है, यहां तक कि लडते लडते उनकी जिन्दगी

की मोहलत खतम हो जाती है तो कयामत के दिन अल्लाह उनकी गल्तीयो को माफ कर देगा और नेक कामो की कदर फरमाते हुवे उन्हें जन्नत मे दाखिल करेगा लेकिन जिस शख्स के छोटे छोटे कामो की पडताल और पूछताछ शुरु हो गई तो वो अजाब मे जरूर मुब्तला हो जायेगा. [मुसनदे अहमद, आयेशा रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ मोमिन के लिये आखिरत के कीमती इनाम

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया अल्लाह फरमाता है मेने अपने नेक बन्दो के लिये वो कुछ तय्यार कर रखा है जिसे किसी आंख ने नही देखा है जिसके बारे मे किसी कान ने नही सुना, और ना कोई इन्सान कभी उसका ख्याल कर सका. तुम चाहो तो ये आयत पढ लो सुरे सजदह/१७ तरजुमा: फिर जेसा कुछ आंखो की ठंडक का सामान उनके आमाल के बदले मे उनके लिये छुपा कर रखा गया है उसकी किसी जान को खबर नही. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

◆ आखिरत के अज़ाब और सवाब की हकीकत

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया दुनिया के सबसे ज्यादा खुशहाल दोजखी को लाया जायेगा और जहन्नम मे डाल दिया जायेगा, जब आग उसके पूरे जिस्म पर अपना असर दिखयेगी तब उससे पूछा जायेगा कि कभी तूने अच्छी हालत देखी है? तुज पर कभी "ऐश व आराम का जमाना आया है? वह कहेगा नहीं तेरी कसम ऐ मेरे रब कभी नहीं.

फिर दुनिया मे बहुत ही “तंगी” (गरीबी) की हालत मे जिन्दगी गुजारने वाले जन्नती को लाया जायेगा, जब उस पर जन्नत की नेमतों का खूब रंग चढ जायेगा तब उस से पूछा जायेगा कि तूने कभी तंगी देखी है? कभी तुज पर कठिनाईयों का जमाना गुजरा है? वह कहेगा ऐ मेरे रबा मे कभी तंगी और गरीबी मे गिरिफ्तार नहीं हुवा, मे ने कठिनाई का कोई जमाना कभी नहीं देखा. [मुस्लिम; रिवायत का खुलासा]

◆ कयामत के दिन रिश्तेदारी काम ना आयेगी

अबू हुरैरा रदी ने फरमाया जब सूरह शुअरा की आयत वनजिर अशीरतकल अकरबीन (अपने करीबी खानदान वालों को डराओ) उतरी तो रसूलुल्लाहﷺ ने कुरैश को जमा किया और फरमाया,

ऐ कुरैश की जमाअत अपने आप को जहन्नम की आग से बचाने की फिक्र करो, मे अल्लाह के अजाब को तुमसे जरा भी नहीं टाल सकता.

ऐ अब्दे मुनाफ के खानदान वालो मे तुमसे अल्लाह के आजाब को कुछ भी नहीं टाल सकता.

ऐ अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब (हकीकी चचा) मे अल्लाह के अजाब को तुमसे जरा भी नहीं हटा सकता.

ऐ सफिया (आपﷺ) की हकीकी फूफी, मे तुमसे अल्लाह के अजाब को जरा भी नहीं हटा सकता.

ऐ मेरी बेटी फातिमा रदी, तू मेरे माल मे से जितना मांगे मे दे सकता हूं लेकिन अल्लाह के अजाब को तुज से नहीं हटा सकता.

तो अपने आप को बचाने की फिक्र करो कि ईमान और अमल ही वहा काम आयेंगे.
[बुखारी, मुस्लीम; अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]

◈ जन्नत और जहन्नम के रास्ते

रसूलुल्लाहﷺ की इस हदीस का मतलब यह कि जो शख्स अपने नफस (असतित्व) की पूजा करेगा और दुनिया की लज्जतो मे पडेगा उस का ठिकाना जहन्नम है, और जिस को जन्नत लेने की तमन्ना हो तो वह कांटो भरी राह अपनाये अपने नफस को हरा कर उसको हर परेशानी और हर नागवारी को अल्लाह के लिये बरदाश्त करने पर मजबूर करे, जब तक कोई शख्स इस कठिन घाटी को पार नहीं करता, आराम व सुख मे कैसे पहुंचेगा. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

◈ जन्नत की शान

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जन्नत मे एक कूडा रखने की जगह दुनिया और दुनिया के सामान से बेहतर है. “कूडा रखने को जगह” से मुराद वह थोडी सी जगह है जहा आदमी अपना बिस्तर बिछा कर पडा रहता है. मतलब यह कि

अल्लाह के दीन पर चलने मे किसी की दुनिया तबाह हो जाये तमाम साज व सामान से मेहरूम हो जाये और उसके बदले जन्नत की मुख्तसर और थोडी सी जमीन मिल जाये तो यह बडा सस्ता सौदा है, खत्म होने चाली चीज की कुरबानी देने के नतीजे मे अल्लाह ने उसे वह चीज दी जो हमेशा बाकी रहने वाली है. [बुखारी, मुस्लीम; रिवायत का खुलासा]

◈ जन्नत और जहन्नम से गाफिल ना रहे

किसी खतरनाक चीज को देखने के बाद आदमी की नींद उड जाती है वह उससे भागता है, और जब तक सुकून ना हो जाये सोता नही, इसी तरह जिसको अच्छी चीज की फिकर हो जाती है तो जब तक वह मिल ना जाये ना वह सोता है ना चैन से बैठता है. अगर यह हकीकत है तो जन्नत की तमन्ना करने वाले क्यों सो रहे है? ये जहन्नम से भागने की फिकर क्यों नहीं करते? जिसको किसी चीज का डर होता है वो बेखबर नही सोता और जिस के अन्दर अच्छी चीज की तडप होती है वो चैन से नही बेठता. [तिर्मिजी, रिवायत का खुलासा]

◆ दीन मे नई चीजे पैदा करने वाले का अन्जाम

हदीस के अन्दर सब से बडी खुसखबरी भी है और बहुत बडा डर भी है, खुशखबरी ये कि रसूलुल्लाहﷺ उन लोगों का इस्तेकबाल करेगे जिन्होने आपके लाये हुवे दीन को बगैर किसी कमी ज्यादती के कुबूल किया और उसपर अमल किया. और जो लोग जान बूजकर दीन मे नई चीजें, दीन के नाम पर दाखिल करेंगे जो दीन से टकराती है तो ऐसै लोग रसूलुल्लाहﷺ तक पहुचने और होजे कौसर का पानी पीने से महरूम रह जायेंगे. [बुखारी, मुस्लीम; सहल बिन साद रदी, रिवायत का खुलासा]

◆ रसूलुल्लाहﷺ की सिफारिश के मुस्ताहिक

रसूलुल्लाहﷺ का यह फरमान अपने अलफाज के हिसाब से बहुत ही मुख्तसर है लेकिन अपने मतलब के हिसाब से बहुत बडा है मतलब यह कि जिस ने तौहीद को नहीं अपनाया जिस ने इस्लाम कुबूल न किया जो शिर्क की गंदगी ही मे पडा रहा उस को रसूलुल्लाहﷺ की शफाअत

हासिल न होगी इसी तरह जिस ने जुबान से तो कलमा कहा और दीन मे दाखिल हुवा लेकिन दिल से उसको सच्चा न माना, वह भी रसूलुल्लाह ﷺ की शफाअत से महरूम रहेगा.

रसूलुल्लाह ﷺ सिर्फ उन लोगों के लिये शफाअत फरमायेंगे जो दिल से ईमान लाये हो जो तौहीद के हक होने पर यकीन रखते हो, जैसा कि दूसरी हदीस मे मुस्तेकिनन बिहा कल्बुहू के शब्द आये है, फिर यह बात भी वजेह है कि यकीन, अमल, पर उभारता है, आदमी को अपने बच्चे के कुवे मे गिरनें की खबर मिलती है तो जैसे ही उसे उस खबर पर यकीन होता है उसी वक्त दुखी होकर उसकी जान बचाने के लिये दौड पडता है यही हाल दिली ईमान का है यह आदमी के अन्दर निजात की फिक्र पेदा करता और आमाल पर उभारता है.

[बुखारी; अबू हुरैरा रदी, रिवायत का खुलासा]